ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI:UPBIL04292, REG. No.: 561/2013-2014 Vol.-1, No.-1, PP-269-275,YEAR-2014

संस्कृत साहित्य में नीतिकथाविषयक अवधारणा एवं प्राचीन कथातत्त्व

❑ डॉ0 कृष्ण चन्द्र चौरसिया

संस्कृत भाषा में निबद्ध कथाओं का प्रचुर साहित्य है जो सैकड़ों वर्षो से मनोरंजन करता हुआ उपदेश देता आ रहा है। नीतिकथा एक छोटी सी कहानी है। आंग्लभाषा में नीतिकथा को Fable (फेबल) कहा जाता है। संस्कृत साहित्य में नीति कथाएं काफी भरी पड़ी है। इनमें पशुपक्षियों की कहानी के द्वारा किसी नीतितत्त्व का प्रतिपादन नीतिकथा में किया जाता है। आग्लभाषा का फेबल की व्युत्पत्ति मूलक व्याख्या ग्रीक, लाटिन, फ्रेंच आदि में किया गया है। लाटिन में Fable शब्द फारि धातु से निकला हुआ है, जिसका अर्थ है–कहानी, कल्पित कथा। यहां मूल धातू फारि का अर्थ होतो है कहना, बोलना।' यहां ध्यातव्य है कि लाटिन मूल धातु फारि और संस्कृत का भाष् दोनों का अर्थ एक ही है। अस्तु इस तथा से स्पष्ट हो जाता है कि नीतिकथा का स्वरूप निवेदनात्मक है। जैसा कि पाश्चात्य आंग्ल आलोचक डॉ0 जान्सन ने नीतिकथा की परिभाषा इस प्रकार दिया है–

"विशुद्ध नीतिकथा एक ऐसा निवेदन है कि जिसमें कुछ बुद्धिहीन प्राणी एवं कभी–कभी अचेतन पदार्थ पात्रों के रूप में नीतितत्त्व की शिक्षा देने के हेतु आये हो और वे मानवीय हितों एवं भावों को ध्यान में रखकर चेष्टा तथा संभाशण करने के कल्पित किये गये हो।"[2] यहाँ डॉ0 जानसन की परिभाषा में नीतिकथा होते है। इसमें 'पात्र' मानवेतर चेतन प्राणी तथा अचेतन पदार्थ होते है। 'हेतु' किसी नीतितत्त्व का प्रतिपादन करता तथा 'कल्पनातत्त्व' मानवीय तथ्यों एवं भावों को ध्यान में रखकर पात्र कल्पित किये गये हो, जिसमें मनुष्योंचित सम्भाषण और चेष्टाओं की कल्पना हो। यहां ध्यातव्य है कि नीतिकथा में जो पात्र आते है, उनका मनोवैज्ञानिक गठन किसी भोगेच्छा पर ही नहीं अपितु मानवीय शाश्वत अनुभूतियों के आधार पर हुआ होता है। चतुरता, स्वामी परायणता, विश्वासपात्रता, धूर्तता या मूर्खता आदि के प्रतिनिधि श्रृंगाल या वृषभ, मार्जार या नकुल, वायस या गर्दभ आदि प्राणी हमारे बनकर कहानी में व्यवहार करते है। उनकी गलतियों से हमें सीख मिलती है एवं उनके अनुभव से हम लाभान्वित होते है। जीवन के अन्यान्य पक्ष उनके द्वारा प्रस्तुत किये गये है। राजनीति में चतुरता, व्यवहार में कुशलता, सदाचार आदि बुद्धिमान पक्ष नीतिकथा के अन्तर्गत दिखाई देते है। पंचतंत्र में जो मानव पात्र आधारित कहानियां है, उनकी संख्या बहुत कम है और जो आयी है वे भी श्रीखलात्मक प्रणाली से किसी पशु द्वारा कही गयी है। विशुद्ध नीतिकथाओं के साथ इन कथाओं का भी जो रचनाएं है उसका एक मात्र कारण लेखक के समय की लोकप्रिय लोककथाओं का प्रभाव है। यही कारण था कि लोककथाओं से प्रभावित विश्णुशर्मा ने जब प्राणि कथाओं को अपनाया तथा उनके साथ लोकसमाज में प्रचलित मानवीय पात्र पर आधारित लोक कथाओं का भी संग्रह हो गया है। इसीलिए हम पाप बुद्धि और धर्मबुद्धि की कथा को नीतिकथा की अपेक्षा लोककथा का साहित्यिक रूप कहेंगे तो अधिक अच्छा होगा। संस्कृत नीतिकथा के लेखक प्रमुख रूप से सजीव पात्रों को ही लेना स्वीकार करते थे, अचेतन पदार्थो की नहीं। विष्णुशर्मा की काकोलूकीयम कथा उसके दृष्टान्त है। काकराज और उलूकराज की यह कथा आरम्भ, मध्य और अन्त की अवस्थाओं को प्राप्त कर समाप्त हो जाती है। यहां पाठक के मन में कौआ और उल्लू जिस समाज या व्यक्तियों के प्रतीक है, उनका चित्र अंकित हो जाता है। पाठक प्राणिकथा से

वरिष्ट प्रवक्ता–संस्कृत, श्री भगवान महावीर पी0जी0 कालेज, पावानगर, फाजिलनगर– कुशीनगर (उ0प्र0), भारत

अपनी कहानी ले लेता है। वास्तव में विष्णुशर्मा को पशु–पक्षियों की लीलाओं का वर्णन मात्र अभीष्ट नहीं है। उन्हे तो इन लीलाओं से मानवीय व्यवहार को व्यंजित करना होता है, किन्तु नीतिकथा लेखक यहीं तक नहीं रूकते, ये अपने नीति तत्त्व को व्यंजित अवस्था में छोड़ना नहीं पसन्द करते। वे अपनी व्यंजना को स्पष्ट करते हुए कहते है–

'अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्'
क्योंकि 'मार्जारस्य हि दोषेण हतो गृधोजरद्गवः'[3]

इस प्रणाली से कही हुई कथा में व्यङ्ग्य कथानक का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। अस्तु कहानी के पहले और बाद में जहां कहानी के सार को स्पष्ट कर दिया जाता हो, वहाँ वह नीतिकथा मात्र रह जाती है। नीतिकथा में नीति का प्रदिपादन स्पष्ट शब्दों में किया जाता है। किसी सिद्धान्त या नीति तत्त्व का प्रतिपादन नीतिकथा का प्रधान उद्देष्य रहा करता है। पंचतंत्र में कहीं–कहीं पर मानव पात्र पर आधारित कहानियां आ गयी है। वास्तव में उन दिनों की वे लोकथाएं है। इनका पंचतंत्र में उद्देश्य नीति का प्रतिपादन ही है। पंचतंत्र में मानवीय पात्रों वाली ये कहानियां अपने आप में स्वतंत्र नहीं हैं वे श्रृंखलामय नीतिकथाओं और प्राणिकथाओं की बीच की कड़ी है। अतएव नीतिकथा में मानवेत्तर पात्रों का होना एक आवश्यक नियम है। कभी–कभी अचेतन वस्तुओं की भी लीला दिखाई देती है किन्तु इस प्रकार की कहानी से 'नीतिकथा' का अवश्यक प्रतिपादन होता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य में कथा तत्व– प्राचीन समय से ही भारत एक कथा–प्रिय देश रहा है। ऋग्वेद जैसे प्राचीन साहित्य में भी कहानी का पूर्व रूप प्राप्त होता है। वही से गीतकथा की परम्परा भारत में चल पड़ी थी। वैदिक साहित्य से कथा विषयक अन्यान्य शब्द प्रचलित हुये। वैदिक साहित्य में सूक्त एवं गाथा शब्द अर्थपूर्ण है। वैदिक संहीताओं में गाथा आदि शब्द पाये जाते है। उत्तर वैदिक काल से ब्राह्मण ग्रन्थों में हमें आख्यान आख्यायिका, अन्वाख्यान, अर्थवाद, संलाप, पवित्राख्यान, इतिहास, पुराण, कथा,आदि संज्ञाएं भी प्राप्त होती है। कथा विशयक धारणा क्या है एवं किस स्वरूप मं गतिशील थी। इसका परिचय हमें जानना होगा–

1. सूक्त – शौनक ने "सूक्त" की व्याख्या की है–"सम्पूर्ण ऋषिवाक्यं तु सूक्तमित्यभिधीयते।।"[4] इस "ऋषिवाक्य" के अर्थ से ही सुभाषित एवं कहावत के लिए "सूक्ति" शब्द बनकर उपयोग में लाया जाने लगा। इससे वैदिक सूक्त का अर्थ संहिता की ऋचाओं का समूह रह गया और "सूक्ति" का अर्थ किसी महापुरूष के वचन के रूप में लिया जाने लगां यह सूक्ति ही कई कहानियों की जननी है और Proverb या लोकोक्ति का बहुत कुछ सम्बन्ध नीतिकथा, परी–कथा या भ्रान्त किंवदन्ती के साथ रहा करता है।

2. गाथा– "गाथा" मूलतः वैदिक वस्तु नहीं है। वह एक अवैदिक तत्व रहा है।[5] वेदों ने जिस लोक सम्पत्ति को अपनाया उसमें ही "गाथा" एक प्रकार रहा होगा एवं वेदों में उसे स्थान मिल गया। इसीलिए उसकी कोई प्रामाणिक व्युत्पत्ति दी जा सकती है 'गै' धातु गाने के अर्थ में कि जाती है। धातु वह बहुत बाद की सिद्ध–साधना है। ऋग्वेद में "नाराशंसी" एक गाथा ही है। वह एक गीत–प्रबन्ध है। इससे ज्ञात होता है कि "गाथा" शब्द का प्रयोग ऋग्वेद एवं अन्य संहिताओं में "गीत" या "पद्य" के अर्थ में ही किया गया है। फिर भी अथर्ववेद में "गाथा" (Stanzas) तथा "नाराशंसी" (Eulogistic Legends of heroes) अलग–अलग पाये जाते है। ऐतरेय ब्राह्मण में उल्लेख है कि ऋक् ईश्वरीय होती है और गाथा मानवीय। ऐतरेय आरण्यक में गाथा का पद्य के अर्थ में ग्रहण हुआ है। वहां पद्य के तीन भेद किये गये हैः ऋक्, गाथा और कुम्ब्याः।[6] शतपथ ब्राह्मण में भी कहा गया है कि गाथा भी ईश्वरीय एंव मानवीय प्रकार की समझी जाती है, प्राचीन गाथा ईश्वरीय एवं इतर मानवीय प्रकार की समझी जाती है। शौनक ने नाराशंसी को दानस्तुति कहा है। वैदिक साहित्य में "यज्ञगाथा" शब्द के प्रयोग से स्पष्ट है कि, यज्ञ में दाता की स्तुति गीत के रूप में हुआ करती थी। तैत्तिरीय ब्राह्मण में अन्न का मल "सुरा" तथा मंत्रादिक का मल "गाथा" इस अर्थ में उल्लेख है। उदाहरण के लिए नाराशंशी का भी निर्देश है। भाष्यकार भास्करभट्ट

ने भी इस प्रकरण में भाष्य किया है कि, गाथा नरप्रधाना अर्थात् मानवों के लिए कही गई होती है। मैत्रायणी संहिता (3.7.3) के उल्लेख के अनुसार गाथा विवाह के प्रसंग पर गाई जाती थी। यह एक लौकिक प्रथा ही थी। वैदिक ऋषियों ने उसे अपने साहित्य में अंकित कर लिया। ''गाथिन्'' या ''गाधिन्'', ''गाथपति'' 'गातुविद्' आदि शब्द ''गायक'' के अर्थ में रूढ़ हुए है। विश्वामित्र को ''गाथिन्'' कहा है।[7] ''गातुविद्'' शब्द से जान पड़ता है कि गाथा को जानने वाले अनेक घराने वैदिक युग में थे।

3. कथा– वैदिक संहिताओं में कहानी के सन्दर्भ अवश्य मिलते है, किन्तु वे स्पष्ट नहीं है। संहिताओं में कथा शब्द का प्रयोग हुआ है[8] किन्तु वह कहानी के अर्थ में नहीं, अपितु 'कथम्' के अर्थ में। ब्राह्मणादि ग्रन्थों में कथा या कहानी के अर्थ में इतिहास, पुराण, आख्यायिका, आख्यान, व्याख्यान, अनुव्याख्यान आदि संज्ञाओं का प्रयोग हुआ है किन्तु ब्राह्मणों में ''कथा'' शब्द आख्यान–वाचक नहीं है।[9]

प्राचीन समय में कथा शब्द रहा है 'चर्चा'। महाभारत में इतिहास के साथ साथ 'कथा' शब्द का प्रयोग भी पाया जाता है। महाभारत के पूर्व ऐतरेय आरण्यक में 'कथा' का प्रयोग हुआ है, जिसे सायण ने 'लौकिकी–वार्ता' कहा है।[10] महाभारत काल में और उसके बाद कथा शब्द जन–प्रिय हो बैठा और प्राचीन काल में 'इतिहास' शब्द से प्राप्त अर्थ 'कथा' शब्द से लिया जाने लगा। 'इतिहास' का प्रयोग बाद में कहानी के अर्थ होना बंद हुआ। सम्भवतः उपनिषद् के बाद तथा महाभारत के पूर्व भी लोकवाणी में 'कथा' शब्द का कहानी के अर्थ में प्रचलन प्रारम्भ हुआ हो। ऐतरेय आरण्यक के 'कथा' षब्द से यह स्पष्ट हो जाता है फिर भी निरूक्त, अनुक्रमणी, बृहद्देवता इत्यादि अन्य वेदानुसारी ग्रंथों में कहानी के अर्थ में 'कथा' शब्द नहीं मिलता।

बौद्ध साहित्य में 'कथा' शब्द का प्रयोग 'अर्थकथा' के रूप में होने लगा था। बुद्धघोष–रचित 'जातकट्ठकथा' (5वीं शती) आदि में 'अट्ठकथा' शब्द का प्रयोग हुआ है। तृतीय बौद्ध–सभा के अध्यक्ष तिसस मोग्गलिपुत्त द्वारा रचित 'कथावत्थु' में, तथा 'धातुकथा' नामक ग्रंथ में भी कथा शब्द का प्रयोग हुआ है, जो प्राचीन है फिर भी यहां यह ध्यान में रखना चाहिए कि, अभिधम्म पिटक के उपर्युक्त ग्रंथो के शीर्षकों में जो 'कथा' शब्द है, उसका अर्थ कहानी नहीं है, अपितु 'चर्चा' ही है। धातुकथा (Discourse on the Elements) तथा 'कथावस्तु' (Subjects of Discourse) में कथा का वही अर्थ है जो ऐतरेय आरण्यक और महाभारत के पूर्व 'चर्चा' के अर्थ में प्रयुक्त होता था। बौद्ध ग्रंथो में भी प्रारंभ में इसी अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त हुआ है। किन्तु 'निदान–कथा' (The narrative of the Beginning) एवं 'जातकट्ठकथा' (ख्रि. 450) में समय में 'कथा' शब्द पूर्णतया कहानी आख्यायिका के अर्थ में रूढ़ हो चुका था फिर भी जातकट्ठकथा में कथा का अर्थ 'अर्थ का विवेचन' या आख्या ही है, (Explanation of the meaning or commentaries) 'जातकट्ठवण्णना' में जिन पांच संभागों पंच्चुपण्णवत्थु, अतीतवत्थु, गाथाएं, व्याकरण, और सम्बोधन में जातक का स्पष्टीकरण हुआ है, उनमें से 'पच्चुप्पराणवत्थु' एवं 'अतीतवत्थु' का कथा विषयक संकेत के लिए महत्व बहुत है। बुद्धदेव ने किस प्रसंग पर यह जातक कह सुनाया, इसकी चर्चा 'पच्चुपण्णवत्थु' (Story of the present time) में आ जाती है और बुद्धदेव के पूर्वजन्म की कहानी 'अतीतवत्थु' (Stroy of the Past) में कही गई है अर्थात् यहाँ हम 'वस्तु' का अर्थ कथा ही ले सकते है। यद्यति 'महावस्तु' के 'वस्तु' का अर्थ महत्वपूर्ण विशय (the great subjects) है, फिर भी इस 'विशय' में ही घटना या प्रसंग (Event) का भी अर्थ प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार 'गाथा–जातक' की व्याख्या (o..kuk) करते समय वर्तमान एवं अतीत प्रसंग प्रस्तुत किये गये। 'पच्चुप्पण्णवत्थु' तथा 'अतीतवत्थु' संज्ञाएं भी कथा–विषयक परिभाषा के क्रमिक विकास को प्रस्तुत करने में सहायक है। बुद्धघोष ने भी जातकट्ठकथा में प्रथम बार 'गुणकथा' शब्द का प्रयोग किया है।

आज की विकसित नीतिकथा की सर्वप्राचीन कल्पना का बीज बौद्ध एवं जैन कवियों ने क्रमशः ''गुणकथा'' एवं ''धर्मकथा'' इस संज्ञाओं को रखकर

किया था। इस प्रकार की स्वतंत्र कथा का उल्लेख करने की प्रथम प्रवृत्ति बौद्ध एवं जैन कवियों में प्रादुर्भूत हुई। संस्कृत साहित्य में, बड़ी कहानियों और प्रबन्धात्मक साहित्य में उपांगभूत रहकर ही ब्राह्मणादि ग्रंथो एवं महाभारत, रामायण, आर्ष महाकाव्यों में छोटी उपकथा, प्रधान "आधिकारिक" वस्तु को पुष्ट करती हुई "प्रासंगिक" कथावस्तु का काम करती थी। किसी प्रबन्ध या तद्गत भाष्य की पुष्टि के लिए हो वैदिक कहानियां प्राप्त होती है। बुद्ध पूर्व काल में कहानी अपने आप में स्वतंत्र न थी। बौद्ध साहित्य में छोटी–छोटी लोककथाएं प्रवेश कर गई क्योंकि जनता में प्रचार के लिए छोटी सी कहानियां कहकर उनमें धर्मतत्व का प्रचार करना बौद्धों द्वारा जरूरी समझा गया। उसके फलस्वरूप स्वतंत्र छोटी कहानियों के युग का प्रारम्भ हुआ। नीतिकथा (Fable) उसी छोटी कहानी का एक रूप होने से उसे पनपने के लिए यही उचित समय था। इसीलिए सम्भवतः नीतिकथा की प्राचीन कल्पना को ध्यान में रखकर ही बौद्ध एवं जैन कवियों ने "गुणकथा" एवं "धर्मकथा" ाब्द अपने ग्रंथो में प्रयुक्त किये थे।

4. आख्यायिका– बैदिक साहित्य के प्रारम्भ काल में 'आख्यायिका' शब्द नहीं मिलता। मूल धातु 'ख्या' का वैदिक साहित्य में दखने के अर्थ में प्रयोग हुआ है।[12] बाद में 'आख्यायिका' का अर्थ हुआ एक ऐसी प्राचीन कथा जो परम्परा से प्राप्त हो। वैदिक साहित्य के उत्तरकाल में तैत्तिरीय–आरण्यक में एक साहित्य के उत्तरकाल में तैत्तिरीय–आरण्यक में एक स्थान पर यह शब्द प्रयुक्त हुआ है फिर भी यह किस अर्थ में वहां रखा गया है। यह स्पष्ट नहीं होता।[13] महाभारत एवं अन्नतर के साहित्य में आख्यायिका शब्द 'कथा' के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। व्याकरण के ग्रंथो में भी आख्यायिका, आख्यान, आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

5. आख्यान– ऐतरेय ब्राह्मण में "शुनःशेपोख्यानम्" का उल्लेख है। वहीं "आख्यानविद्" अर्थात् (सौपर्ण) आख्यान को जानने वालों का भी उल्लेख है।[14] सोपर्णाख्यान को शतपथ ब्राह्मण में 'व्याख्यान' भी कहा गया है।[15] आख्यान में ही "परिप्लव' नामक एक ग्रंथ है, जिसका अर्थ है–अश्वमेधयज्ञ के अश्व का परिभ्रमण होता रहता है तब कहीं जाने वाली कहानियों की आवृत्ति या चक्र। संहिता में आख्यान पद्यमय ही मिलते है फिर भी गद्यभाग का लोप हो चुका होगा, इस प्रकार की कल्पना पश्चिम के हर्टेल, श्रोडर आदि विद्वानों ने की है। "निदान" संज्ञा की भी महत्ता "आख्यान" के लिए निरूक्तकारों द्वारा दिखाई गई है। निरूक्त में निदान एवं नैदानिक शब्द आये है। इनका इतिहास के साथ घना सम्बन्ध है। निदान का अर्थ है निमित्तकरण या हेतु किन्तु निरक्त में इसका अर्थ कथाविषयक परिभाषा में विशेश रूप में स्थिर कर दिया गया है। इतिहास को षड्गुरूशिष्य ने निदानभूत कहा है। आख्यान का सम्बन्ध मात्र की अभिव्यक्ति के साथ जोड़ दिया गया है। निरूक्त में "आख्यान" का विवेचन "निदानप्राख्यापन" शब्द के प्रयोग द्वारा किया गया है।[16]

6. अन्वाख्यान–उपाख्यान– अन्वाख्यान–उपाख्यान इस शब्द से ही स्पष्ट है कि आख्यान का यह अनुसरण करता है। इसे उपकथा कह सकेंगे। शतपथ ब्राह्मण में तीन स्थान पर यह शब्द प्रयुक्त हुआ है फिर भी, इतिहास एक शुद्ध कथा है एवं अन्वाख्यान गौण या पूर्ति करने वाला निवेदन। बड़ी कहानी में जो गौण कथा कही जाती है, उसे उपाख्यान कहा जाता है।"अनुव्याख्यान" शब्द भी वृहदारण्यकोपनिषद् में प्राप्त है। झीग महाशय अनुव्याख्यान एवं अन्वाख्यान को एकार्थवाचक मानते है।

7. बृहदेवता में निर्दिष्ट तीन संज्ञाएं– "आचिख्यासा" "संलाप" और "आख्यान" या "परिपव्याख्यान' ये तीन परिभाषिक संज्ञाएं कथा के अर्थ में शौनक ने अपने वृहद्देवता ग्रंथ में निर्दिष्ट किये गये है। बृहद्देवता ग्रंथ निरूक्त एवं सर्वानुक्रमणिका के मध्यकाल में (ख्रि.पू. 400 वर्ष) लिखा गया है। शौनक ने "आचिख्यासा" का उदाहरण "न मृत्युरासीत्" दिया है।[17] आचिख्यासा का अर्थ है निवेदन करना और संलाप का अर्थ है संवाद। "आख्यान या पवित्राख्यान" का भी उदाहरण शौनक ने दिया हुआ है। आख्यानं तु हये जाये विलापः स्यान्नदस्य मा। विख्यात कथा

"पुरूरवा और उर्वशी इस कथा मे कही गयी है। प्राचीन परम्परा से प्राप्त कहानी को अपनाकर कहा है और विशेषतया उसमें जो पात्र है, उन्हे काल्पनिक नहीं माना जाता है। मेकडोनेल महाशय ने "आचिख्यासा" को narrative तथा "पवित्रख्यान" को (Purifying) narrative ये प्रतिवाची शब्द दिये है। संस्कृत में "आचि–कात्मा" का वास्तविक अर्थ "कुछ कहने या व्यक्त करने की इच्छा या हेतु" है। शौनक ने जिस ऋग्वेद की कथा का निर्देश किया है वह एक उत्पत्तिकथा ही है किन्तु कहने की इच्छा मात्र रूप अर्थ शौनक को अभिप्रेत नहीं रहा। "आचिख्यान" से "पुराण" का अर्थ लिया जा सकता है। क्योंकि पुराण का प्रयोग प्राचीन काल में इसी प्रकार की उत्पत्ति–कथा के अर्थ में होता था। इस तथ्य को पुष्टि सायण के भाग्य से भी होती है। आख्यान का रूप भी इतिहास से कोई भिन्न नहीं था। पुरूरवा और उर्वशी की कथा वेद–कालीन लोककथा ही थी। उसे आर्यो ने दैवतकथा का रूप दे डाला है। महाभारत में आख्यान को "सांगोपनिषदं वेदांश्चतुराख्यानपंचमान्" आदि वचन से इतिहास–पुराण के अन्तर्गत ही मान लिया गया है। महाभारत में आख्यान कथा, इतिहास पुराण, पुरावृत्त, आदि शब्द एक ही अर्थ में प्रयुक्त हुए है फिर भी "इतिहासवेद" तथा "पुराणवेद" शब्द उसमें पाये जाते है किन्तु "आख्यानवेद" का कोई उल्लेख नहीं है। इसका कारण ययाति आदि फुटकल कहानियों का ही "आख्यान" शब्द से अभिप्राय महाभारत में रहा होगां झीग महाशय का यही मत है जो समीचीन् जान पड़ता है क्योंकि महाभारत के अनन्तर ही बृहत्कथा के रूप में कहानियों का विशाल संकलन प्रस्तुत हुआ, और वह महाभारत एवं रामायण को समकोटि का ग्रंथ हो बैठा किन्तु यहाँ स्पश्ट कर देना चाहिए कि उन दिनों कथा या आख्यान का विषयभेद की दृष्टि से उपयोग नहीं हुआ करता था। आख्यान का अर्थ फुटकल कहानियों भले ही रहा हो, किन्तु बृहत्कथा की कहानियां "कथा" के अन्तर्गत रखी गई है।

8. अर्थवाद– ब्राह्मण–साहित्य में मन्त्रों एवं यज्ञीय विधि की व्याख्या करते समय कुछ 'कथाएं" कही गई है। उन्हे "अर्थवाद" संज्ञा प्राप्त है। ऐतरेय' ब्राह्मण के भाष्य का प्रारंभ करते समय सायणाचार्य ने अर्थवाद का स्वरूप स्पष्ट कर दिया है।[18] अर्थवाद याने् "भूतार्थवाद", अर्थात जो घटना हो चुकी है उसकी वार्ता। जिस प्रकार ब्राह्मण ग्रंथों में "विधि" और "अर्थवाद" की स्थिति साथ साथ पाई जाती है, ठीक उसी प्रकार "जातक" के साथ उसके स्पष्टीकरण (अर्थवाद) के लिए 'अट्ठकथा' का उपन्यास होता है। जातकट्ठकथावण्णना में, जो "अट्ठकथा" है। वह संस्कृत अर्थवाद का ही स्पान्तर है। ये अट्ठकथाएं जातक एवं अन्य कथाओं को कह कर गाथा का स्पष्टीकरण करती है, जैसे कि ब्राह्मण ग्रंथों में "अर्थवाद" के अन्तर्गत "इतिहास"एवं "आख्यान" आते है। किन्तु संस्कृत में अर्थवाद का इतिहास के साथ सामंजसय सथापित हो गया वैसा वह अट्ठकथा का पालि में नहीं हुआ। पालि में "जातकों" का स्पष्टीकरण यही अर्थ अट्ठकथा को प्राप्त हुआ है। नीतिकथा और अर्थवाद के स्परूप को देख लेने पर यह कहा जा सकता है कि, जहां तक किसी विधि या सिद्धान्त के प्रतिपादन या स्पष्टीकरण के लिए कहानी कहने की प्रणाली का प्रश्न है, अर्थवाद एक ही है। प्राचीन काल में इतिहास–पुराण संज्ञाओं में कोई विशेष भेद परिलक्षित नहीं होता था। इनका अर्थ "प्राचीन कथा" ही हुआ करता था। सायणाचार्य ने अपने भाष्य में लिखा है।

"देवापुराः संयता आसन्नित्यादय इतिहासाः। इदं वा अग्रे नैव किंचनाऽऽ .....जगतः प्रागवस्थानमुपक्रमय सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं .....।

स्पष्ट है कि देवासुर–कथा को "इतिहास" एवं विश्व की उत्पत्ति की कथा को "पुराण" कहा गया है किन्तु सायण द्वारा प्रदर्शित यह भेद अत्यंत प्राचीन समय में नहीं दिखाई देता। "इति ह आस" (ऐसा यह था) इस व्युत्पत्ति से भूतार्थ–कथा को ही "इतिहास" कहा जाता था। बृहद्देवता में "इतिहासः पुरावृत्तं ऋषिभिः परिकीर्त्यते" यह इतिहास की व्याख्या शौनक ने की है।[19] महाभारत में इतिहास के अन्तर्गत प्राणिकथाओं को भी निर्दिष्ट कर दिया है।[20]

"इतिहास–पुराण" शब्द प्रथम अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों में पाया जाता है। इन ग्रन्थों में Legends,

डलजी या आख्यायिका, आख्यान आदि के अर्थ में ''इतिहास–पुराण'' का प्रयोग हुआ है। बाद में ''कथा'' शब्द इतिहास के साथ भी आने लगा। इतिहास शब्द का प्रयोग आगे चलकर कम प्रमाण में हुआ। आख्यायिका, आख्यान आदि षब्द तो महाभारत में भी यत्र–तत्र दिखाई देते है।

अथर्ववेद में ''पुराण'' का अभिप्राय ''पुरानी कहानी'' से ही है। इससे स्पष्ट है कि यह प्रकार अथर्ववेद के समय में भी प्राचीन रहा है। ''पुराण'' की धारा वैदिक युग में दैवत–कथा उत्पत्तिकथाओं के रूप मं अक्षुण्ण बहती हुई अष्टादश पुराणों एवं उपपुराणों के सागर में परिणत हुई है। शतपथ ब्राह्मण में (13, 4, 3, 12, 13) ''अन्वाख्यान'' एवं ''इतिहास'' का भेद दिखाया गया है जो स्पष्ट नहीं है। जैमिनीयोपनिषद् (1.43), बृहदारण्यकोपनिषद् (1,4,10, 4,1,6) तथा छान्दोग्योपनिषद् (7, 1) में भी ''इतिहास'' शब्द प्रयुक्त है। शांखयन–श्रौतुसूत्र में ''इतिहासवेद'' तथा गोपथ–ब्राह्मण में ''पुराण'' का उल्लेख है। शतपथब्राह्मण आदि ग्रंथो में इतिहास–पुराण नामक कोई किंवदन्ती वीर–कथा, उत्पतिकथा और वंशकथा का संकलन रहा होगा। इस प्रकार की सम्भावना भी झीग महाशय द्वारा प्रकट की गई है फिर भी पतंजलि ''इतिहास'' एवं ''पुराण'' को अलग अलग मानते है। निरूक्त में भी यास्क ने इस संभावित ग्रंथ का कहीं उल्लेख नहीं किया है। इससे झीग महाशय की संभावना की पुष्टि नहीं की जा सकती। तैत्तिरीय ब्राह्मण में तैत्तिरीय संहिता से उद्धरण देकर (3,12, 8,47) इतिहास पुराण की चर्चा को गई है, उसका भाश्य भट्टभाष्कर द्वारा इस वचन से किया गया है। इससे लगता है, प्राचीन समय में ''इतिहास–पुराण'' के अनेक भेद रहें होंगे।

सूत्र परम्परा से ही इतिहास–पुराण की धारा प्रवाहित हुई थी। वेदिक सुक्तियों के समकक्ष सूतवर्ग के भी अभिव्यक्ति इन आख्यानों के द्वारा हुई थी। निरूक्त में इतिहास शब्द का प्रयोग हुआ है। इतिहास पुराण को महाभारत में पंचम वेद मान लिया गया है। बौद्धों द्वारा भी इसे मान्यता मिल चुकी थी। जैन सम्प्रदाय मे भी पुराण के लक्षण के अनुसार आदि पुराण की रचना हुयी थी किन्तु बौद्धों ने पुराण क्षब्द का संकेत सर्वत्र नहीं किया एवं उनके पांच लक्षणों को भी नहीं मानते थे। गौतम धर्मसूत्र में ''पुराण'' का अध्ययन करने के लिए कहा गया है। आपस्तम्ब धर्मसूत्र (खि.पू. 500 वर्ष) में भविष्यपुराण का उल्लेख प्राप्त है। धर्मशास्कारों ने इतिहास एवं महाभारत की एकता को ही देखा। इतिहास के लिये महाभारत का उदाहरण दिया जाता है। आख्यान के लिए सौपर्ण, मैत्रावरूण आदि के उदाहरण समृतिकारों के टीकाकार देते है। आगे चलकर सायणाचार्य ने ''ऐतिहासिकी कथा'' का भी उल्लेख कर दिया है। कथा–सरित्सागर में ''इतिहास'' शब्द का उल्लेख नहीं मिलता। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में ''इतिहास'' के अन्तर्गत निम्न प्रकार के अंग रख दिये है।''पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदारहणं धमश्षास्त्रमर्थशास्त्रं चेतीतिहासः।''इस वचन से पुराण, इतिवृत्त, आख्यायिका, उदाहरण, धर्मशास्त्र एवं अर्थषास्त्र को कौटिल्य ने इतिहास के अन्तर्गत मान लिया है। इस विषय का विवरण प्रस्तुत करते समय श्री हरियप्पा ने आख्यायिका के लिए अंग्रेजी समानार्थी शब्द Favle दिया है। वास्तव में आख्यायिका से कौटिल्य का संकेत किसी कल्पित कथा की ओर नहीं दिखाई देता, अपितु कोई यथार्थ घटना के विषय में ही वहां आख्यायिका का विधान है तो कि परम्परा से कही सुनी कहानी के रूप में प्राप्त होती थी। वहां लीजण्ड शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिये। यहां हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि, पतंजलि का भी आख्यायिका से 'वासवदत्ता' 'सुनमोत्तरा' आदि जनश्रुति पर आवृत, परम्परा से प्राप्त प्राचीन कथाओं से ही अभिप्राय था, न कि किसी नीतिकथा या फेबल से। यदि आख्यायिका के लिए केवल व्यापक संज्ञा का ग्रहण करना हो तो उसे एक narrative ही करना समीचीन होगा, favle नहीं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Walter W. Skeat: Etymological Dic tionary of the Egnlish Langaug, Ox ford 2nd Edition, 1883, P. 201.
2. "A, Fable or Apologue, such as is

now under consideration seems to be in its genuine state of a narrative in which beings irrational and some times inanimate, 'arbores loguuntur nontantum farce' (7) are for the Pur pose of Moral instruction feogned to act and speak with human interests and pas sions(8)" Dr. Samuel Johnson: Lives of the Eglish Poets' Vol II, Edited by G. Birkbeck Hill, Oxford, Gay, P. 283.

3. अथर्व, सं0 25–6,
4. बुहद्देवता, Ed. by Macdonell, Part I, अध्याय 2.13.
5. (क) ऋ0सं. 8/32/1
   (ख) Monier William's Sanskrit En glish dictionary, Oxford, P. 287 (गातु) गाथा "a verse which is neither a Ric, nor Saman, nor Yajus, a religious verse, but not one belonging to the Vedas.
6. ऐ. आ. 2.3.6
7. तै. ब्रा. 1, 3.3.13–14
8. ऋ. सं. 1.41.7, 1.5.4.2, माध्य सं0 17.17 तै. सं. 2ए 5ए 8ए 4 मै. सं. 1.4.12 काठंक सं. 10, 7 काण्व सं. 18/2/3
9. शांखा0 ब्रा 2.7.12 जै. ब्रा., खं. 6
10. एं0आ0 5.3.3 कथां वदेत् नास्य रात्रौ0 30, कथां न वदेत् लौकिकीं वार्तां न कुर्यात् इति सायणः।
11. ''भन्ते तुम्हाकमेव गुणकथामाति सब्बं आरोचयिंसु।''
    जातकट्ठकथा, पच्चुपण्णवत्थु, भारतीय ज्ञानपीठ, काषी, 1672, पृ0 104
12. Monier William's Sanskrit English Dicrionary, Oxford p. 277
13. Macdonell and Kieth, Vedic Index, I. p 52
14. ए.ब्रा. (3/25/1) आनन्दा आ. संस्कृत ग्रन्थावली 1931 पृ.सं. 858–589
15. शतपथ ब्रा. 3,6,7,7 Macdonell & Kieth-Vedic Index, II p. 52.
16. (क) श. प. ब्रा. 13, 4, 3, 2, 15, Macdonell's translation of the word ifjiyo is Cy clic (Vedic index I.p. 52.)
    (ख) निरूक्त 6,9
17. क्र.सं. 10, 121.2 बृ.दे. 1.48 निरूक्त 7.3
18. ऐ. ब्रा. (आ. सं. ग्र.) 1931, पृ0 3रू
    'विरोधे गुणवादः स्यादनुवादोऽवधारिते।
    भूतार्थवादस्तद्वानादर्शवादस्त्रिधा मतः ।। इति।
19. बृहद्देवता, 4.46
20. शान्तिपर्व, राजधर्मपर्व, अध्याय 111